॥ श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम् ॥

परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम
भगवान श्री सहजानंद स्वामी लिखिता

शिक्षापत्री

-: प्रकाशक :-

श्री सहजानंद संस्कार धाम महामंत्रपीठ

फरेणी (स्वामिनारायण) **पीन** - ३६०३७०

प्रेरक :- प.पू.सद्.शास्त्री श्री बालकृष्णदासजी स्वामी

A

-: प्रकाशक :-

दशाधिक द्विशताब्दि स्वामिनारायण महामंत्र प्रागट्य पर्वे
श्री सहजानंद संस्कार धाम महामंत्रपीठ
फरेणी (स्वामिनारायण) पीन - ३६०३७०

-: प्रकाशक तिथि :-

संवत् २०६८ मागशर वद-११, ता. २१-१२-२०११

प्रथम आवृति : प्रत :- १०००

मूल्य : १० = ००

- : प्राप्ति स्थान :-

श्री सहजानंद संस्कार धाम महामंत्रपीठ

फरेणी (स्वामिनारायण) **पीन** - ३६०३७०
तालुका :- धोराजी, जिल्ला :-राजकोट (गुजरात)
फोन :- (०२८२४)२८३३८३,२८३१०८

-: मुद्रक :-

हरिकृष्ण ग्राफिक्स, अमदावाद
(079) 2642 1008, मो. 98258 50559

B

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम् ॥

शिक्षापत्री ध्यानम्

जब संसारमे विज्ञानका विलय हुआ और हृदयके अज्ञानरुप अन्धकारका प्रसार हुआ तथा संसारमार्गमें भ्रान्तप्राणी दिङ्मूढ हुये, कर्तव्या-कर्तव्यार्थमे भी विभ्रान्त हुये, एवं वैदिक कर्ममार्गका सब प्रकारसे केवल प्राणीयोंको पीडा करनेमें ही पर्यवसान हुआ तब केवल करुणासे ही साक्षात् अक्षरधामाधिपति स्वयं श्रीहरिने अवतार धारण करके मोक्ष देनेवाली जो शिक्षा दी है, ऐसी ईस शिक्षापत्रीका मैं प्रतिदिन ध्यान करता हुं ॥१॥

संसाररुपी कीचडमें चारों ओर लुढकनेसे कीचडरुप बने हुये मनुष्योंको उनका मैल धोकर निर्मल करने के लिये जिसका अवतार हुआ है, और अविद्यारुप गाढांधकारको दुर करनेमें समर्थ ऐसी हे शिक्षापत्री ! मैं तेरा चिंतन करता हुँ ॥२॥

C

शिक्षापत्री ध्यानम्

यह शिक्षापत्री अन्तरके तिमिर (अज्ञानरुपदोष) को हरणकरनेवाली कोई अपूर्व अंबनशलाका (अंजनलाई) है, इसलिये प्रज्ञारुपी दृष्टिके प्रकाशके लिये हरेकको उपसेवन करने योग्य है ॥३॥

ईस शिक्षापत्री अनेक प्रकारके देशोंमे रहे हुये शिष्यसमूहों को लक्ष्य करके साक्षात् अक्षरधामनिवासी मनुष्यमूर्ति श्रीस्वामिनारायण भगवानने खुद आविष्कार किया है। और शतानंद मुनिने जिसका सत्संगिजीवन ग्रन्थमें ग्रथन किया है, ऐसी-संसार से निवृत्ति करानेवाली हे शिक्षापत्री मात ! तुम्हारा मैं प्रतिदिन चिंतन करता हुँ ॥४॥

श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा कही हुई, और शतानंदमुनिद्वारा श्री सत्संगिजीवन के मध्यमें ग्रथित की हुई शिक्षापत्रीका मैं आश्रय लेता हुँ ॥५॥

D

सम्पूर्ण शास्त्ररुपी क्षीरसागरके मध्यसे उद्धार किया हुआ सर्वोत्तम शिक्षापत्रीरुप कोई अपूर्व अमृत, मनुष्यों के अमृत (मोक्ष) के लिये कल्पित है। अर्थात् जो इसका पान करे उन सबको मोक्ष प्रदान करती है। ॥६॥

सत्पुरुषोंके शरण्य (रक्षक) ऐसे श्रीसहजानंदस्वामी देवने जो शिक्षापत्रीरुप अमृत इस लोकमें मुकुंदानंदादि आश्रितोंको प्रथम पान कराया था, ओर जिस शिक्षापत्री रुप अमृत को पान करके दैवी मनुष्यगण अनायास ही प्रसिद्ध आसुरी सम्पतिका उच्छेद करनेको तैयार होते हैं, संसाररुप रोगको नाश करनेमें मुख्य औषध रुप शिक्षापत्री-अमृतका हम उपासन करते हैं ॥७॥

संसार सागरमें पडे हुये प्राणियोंका उद्धार करके, उनका आत्यंतिक श्रेय करनेकी इच्छासे उपदेश लिखनेके हेतु जिन्होंने पत्र लेखका स्वीकार किया है,

ऐसे वर्णिवेष श्रीनारायणमुनि मेरे हृदयमें सदा स्फुरित होते रहो ॥८॥

आश्रितों पर स्नेह व्यक्त करता और सुंदर मंदहास्यवाला जिसका मुखकमल है, ऐसे शिक्षापत्रीको लिखते हुये धर्मनंदन श्रीहरि मेरे हृदयमें सदा संविराजमान रहो ॥९॥

भगवान श्रीस्वामिनारायण श्रीहरिका सर्वमंगलकारी यह दूसरा स्वरुप शिक्षापत्री रुपसे पृथ्वी पर प्रकाशित है ॥१०॥

हे शिक्षापत्री मात ! समस्त शिष्यसमूहोंने आदरसे जिसकी प्रार्थना की है ऐसे सर्वकारण देवाधिदेव श्रीसहजानंदस्वामीने तुम्हारा आविष्कार किया है ! सबको फल देनेवाली देव ऐसे भगवानकी तु दूसरी मूर्ति है ऐसी भावना करके, हे देवि ! प्रतिदिन प्रेमसे बारबार तुम्हारा सेवन करता हुँ ॥११॥

जगतके हितके लिये मैंने जो शिक्षापत्रीरुप अमृत प्रकट किया है, वह यह अमृत समस्त मेरे भक्तजनोंको प्रतिदिन आदरसे सेवन करने योग्य है ! ऐसी भगवानकी आज्ञाका अनुर्मरण करके जो पुरुष प्रेमपूर्वक इस शिक्षापत्रीका पाठ करता है, वह सनातन परम अक्षर-धामको प्राप्त करता है ॥१२॥

इति श्री शिक्षापत्री ध्यानश्लोका पंचभाषी अर्थयुक्तां समाप्ता

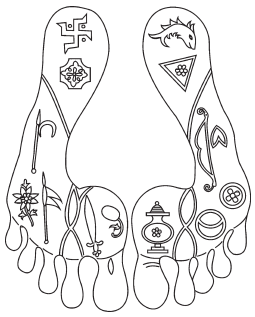

श्री स्वामिनारायण भगवानके चरणारविंद

॥ शिक्षापत्री दर्शनम् ॥

शिक्षापत्री लौकिक और पारलौकिक सर्व क्षेत्रोमें, सर्व प्रकार अधोगतिमेंसे उर्ध्वगति देनार है। संसार सागरमें भूले भटकेको दिवांदांडीरुप है। धर्माचार्यो, गृहस्थ सत्संगीयों, सधवा - विधवा स्त्रीयो, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र ये चार वर्णे, राजाओ, ब्रह्मचारीयों, साधुओ एवं जीवप्राणी मात्रकी यह शिक्षापत्री जीवनदोरी है। यह शिक्षापत्री श्री हरिका स्वयं स्वरुप है। प्रत्यक्षरुपसे सर्वके दष्टि गोचर है। यह शिक्षापत्रीरका वर्तमानकालमें शुध्ध रुपसे आचरण जो करता है वह मानव भृतकालकी भूलोंका प्रायश्चित कर सकता है। भविष्य कालकी भूलोंसे बच सकते है। बहुतसे भक्तगण अैसा मानते है कि अभी देशकालके

करना चाहिये । यह मान्यता सत्य नहीं हैं क्योकि सत्युग के मनुष्यकी लाख वर्षकी आयु थी और द्वापरयुग में मनुष्यको हजार वर्षकी आयु थी । ये त्रेता युगमें मनुष्यकी आयु दश हजार वर्ष आयु थी और द्वापरयुगमें मनुष्यकी हजार वर्षकी आयु थी । ये तीन युगके मनुष्यकी आयु और बुद्धि के अनुसार धर्मशास्त्रकी रचना की हुई थी । किन्तु कलीयुगके मनुष्यों सो वर्षकी आयु और बुद्धि भी मर्यादित होनेसे भगवान श्री सहजानंद स्वामी निष्कारण करुणा करके कलीयुगके अल्पज्ञ मनुष्योंके लिए अपना खुद स्वरुपका प्रदान किया है । ईस लिये "शिक्षापत्री" कृपापत्री है । शिक्षापत्री स्वयं ईसलिये अनेक आध्यात्मिक माताकी जरुरत पुरी करती है ।

शिक्षापत्रीमें लेखन वर्ष, मास, तिथि और समय स्पष्ट रुपसे लिखनेमें आयी है । उन परसे,

अनुसार शिक्षापत्रीकी बहुतसी आज्ञाओमे परिवर्तन तय होता है कि शिक्षापत्री पालनकी पाप्ति अति स्पष्ट है । जैसे लिख गया है वैसा ही हुआ होगा और होनेवाला है । शिक्षातत्री के विरुद्ध वर्तन करनेवाला कोई भी सुखी हुआ नहीं हैं और होगा मी नहीं । शिक्षापत्री के अनुसार कोई भी मनुष्य दु:खी हुआ नहीं है । ईस तरह शिक्षापत्री श्रीजी महाराजकी भांति स्वयं सर्वोपरि है ।

यह हिन्दीमें प्रथम आवृत्ति श्री स्वामिनारायण महामंत्र प्रागट्य दशाधिक द्विशताब्दि महा महोत्सवके उपलक्ष्यमें श्री सहजानंद संस्कार धाम महामंत्रपीठ - फरेणी (स्वामिनारायण) की ओर से किया गया है । इसके आर्थिक योगदान अ. नि. मातुश्री जमनाबेन गोरधनभाई गजेरा की

पूण्य स्मृतिमें दिल्ली स्थित प. भ. रमेशभाई गोरधनभाई गजेरा और उनकी ध. प. अ. सौ. कुंदनबेन रमेशभाई गजेराने उदार भावसे की है । इनके साथ सेवा में भाग लिया अ. नि. पिताश्री मोहनलालभाई की पूण्य स्मृति में उनके सुपुत्र प. भ. रामरतन मोहनलाल अग्रवाल उनकी गं. स्व. मातृश्री निर्मलादेवी, सुपुत्रो पुनित, सुमित और परिवारने सहयोग दिया । महामंत्र पीठाधिपति भगवान श्री स्वामिनारायण दाताओं को सर्व प्रकार से मंगल श्रेय करे अैसी अभ्यर्थना ।

चरण सेवक
नौतमलाल केशवलाल सोलंकी
राजकोट

।। शिक्षापत्री विष्यानुक्रमणिका ।।

१-१० मंगलाचरणादि उपोद्घात ।
११-१२१ साधारण धर्म ।
१२२ साधारण धर्मोपसंहार ।
१२३-१३२ आचार्य का विशेष धर्म ।
१३३-१३४ आचार्य पत्नी का विशेष धर्म ।
१३५-१५६ गृहस्थ का विशेष धर्म ।
१५७-१५८ राजा का विशेष धर्म ।
१५९-१६२ सधवा स्त्री का विशेष धर्म ।
१६३-१७२ विधवा स्त्री का विशेष धर्म ।
१७३-१७४ सधवा विधवा का सामान्य धर्म ।
१७५-१८७ ब्रह्मचारी का विशेष धर्म ।
१८८-१९६ साधुओ का विशेष धर्म ।
१९७-२०२ वर्णिसाधु के मिश्रित धर्म ।
२०३-२१२ उपसंहार ।

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

।। शिक्षापत्री ।।

श्रीसहजानंदस्वामी जो अपने सत्संगीजनों के प्रति शिक्षापत्री लिखते हुये प्रथम अपने इष्टदेव श्रीकृष्ण भगवानका ध्यानरुप मंगलाचरण करते हैं । मैं खुद अपने हृदय में श्रीकृष्ण भगवानका ध्यान करता हूँ । वे श्रीकृष्ण कैसे हैं ? जिनके वामांगमें राधिकाजी विराजमान हैं, और जिनके वक्षःस्थलमें लक्ष्मीजी विद्यमान हैं, तथा जो वृन्दावन विहारी हैं ।।१।।

और जो वडताल गाँवमें रहनेवाले ऐसे सहजानंदस्वामी जो हम, नाना प्रकारके देशवासी ऐसे हमारे जो आश्रित सर्व सत्संगीजन हैं, उनके प्रति शिक्षापत्री लिखते हैं ।।२।।

श्रीधर्मदेव जिनके पिताथे ऐसे हमारे भाई रामप्रतापजी तथा इच्छारामजी उनके पुत्र जिनका नाम

अयोध्याप्रसाद तथा रघुवीर हैं । (जिनको हमने अपना दत्त पुत्ररुप से समग्र सत्संगीजनोंके आचार्य पद पर स्थापित किया है) ।।३।।

तथा हमारे आश्रित ऐसे मुकुन्दानंद आदि नैष्ठिक ब्रह्मचारी एवं हमारे आश्रित मयाराम भट्ट आदि जो गृहस्थ सत्संगी हैं ।।४।।

तथा हमारे आश्रित जो सुवासिनी और विधवा स्त्रियाँ, और मुक्तानंद आदि सब साधुगण हैं ।।५।।

वे सब अपने धर्मकी रक्षा करनेवाले और शास्त्रसंमत तथा श्रीमन्नारायण की स्मृति सहित हमारे शुभ आशीर्वादोंको वाँचें ।। ६ ।।

और यह शिक्षापत्री लिखनेका जो कारण है, वह सब एकाग्र मन करके धारण करें । हमने जो शिक्षापत्री लिखी है, वह सभी जीवोंका हित करनेवाली हैं ।। ७ ।।

श्रीमद् भागवत् पुराण आदिक जो सत्शास्त्र उन्होनें जीवके कल्याणके लिये प्रतिपादन किये ऐसे जो अहिंसा आदि सदाचार, उन्हें जो मनुष्य पालता है, वह मनुष्य इस लोकमें और परलोकमें सुखी होता है ।। ८ ।।

और उन सदाचारोंका उल्लंघन करके जो मनुष्य अपने मनके अनुसार यथेच्छ वर्ताव करते हैं, वे तो कुबुद्धिवाले हैं । और इस लोक तथा परलोकमें भी निश्चयसे बडा कष्ट पाते हैं ।। ९ ।।

इसलिये हमारे जो शिष्य आप सभी हैं, उनको तो प्रीतिपूर्वक इस शिक्षापत्री के अनुसार ही निरंतर सावधान होकर आचरण करना चाहिये । इस शिक्षापत्रीका उल्लंघन करके आचरण कभी न करें ।। १० ।।

अब आचरण की रीति बताते है कि, जो हमारे सत्संगीजन हैं, वे तो जीव-प्राणिमात्र की हिंसा न करें । और जानबूझकर तो सूक्ष्म ऐसे जूं, खटमल, चांचड आदि जीव हैं उनकी भी हिंसा नहीं करनी चाहिये ।। ११ ।।

और देवता तथा पितृ आदिके यज्ञके लिये भी-बकरा, हिरन, खरगोश, मछलियाँ आदि किसीभी जीवकी हिंसा न करें। क्योंकि, ''अहिंसा ही महान् धर्म है'' ऐसा समग्र शास्त्रो में कहा है ॥ १२ ॥

और स्त्री, घन तथा राज्यकी प्राप्तिके लिये भी किसी मनुष्यकी हिंसा, किसी भी प्रकारसे कभी भी न करें. ॥ १३ ॥

और आत्महत्या तो तीर्थमे भी न करें, तथा क्रोध करके न करें। यदि कभी कोई अयोग्य आचरण हो जाय तो उससे झुंझलाकर आत्महत्या न करें, जहर खाकर तथा गलेमें फंदा डालकर और कुअेंमें गिरकर तथा पर्वतपरसे कूदकर, इत्यादि किसी भी तरहसे आत्महत्या न करें ॥ १४ ॥

और जो मांस है वह तो यज्ञका शेष हो तो भी आपत्कालमें भी न खायें। और तीन प्रकारकी शराब तथा ग्यारह प्रकारके मद्य, यदि देवताका नैवेद्य हो तो भी न पीयें ॥ १५ ॥

और यदि अपनेसे कोई बुरा आचरण हो गया हो अथवा कोई दूसरे द्वारा अयोग्य आचरण हुआ हो तो शस्त्रादिसे अपने अंगका या दूसरो के अंगका छेदन न करें ॥ १६ ॥

और धर्मकरनेके लिये भी हमारे सत्संगीजन कभी चोरी का कर्म न करे। तथा मालिकी की लकडी, फूल आदि वस्तुएँ हों, उन्हे मालिक की आज्ञा बिना न ले ॥ १७ ॥

और हमारे आश्रित जो पुरुष तथा स्त्री हों, वे व्यभिचार न करें। और जूआ आदि जो व्यसन हैं, उनका त्याग करें। भांग, चरस और अफीम आदि जो नशीली चीजें हैं उन्हे न खावें और न पीये ॥ १८ ॥

और जिसके हाथका पकाया अन्न तथा जिसके पात्रका जल वर्ज्य हो उसका पकाया अन्न तथा उसके पात्रका जल, श्रीकृष्ण भगवानकी प्रसादी या चरणामृत का माहात्म्य मानकर भी जगन्नाथपुरी विना अन्य

स्थानपर ग्रहण न करें। जगन्नाथपुरी में जगन्नाथजीका प्रसाद लिया जाय, इसका दोष नही है ॥ १९ ॥

और अपने स्वार्थकी सिद्धिके लिये भी किसी पर मिथ्या-अपवाद-आरोपण न करें। तथा किसीको कभी भी गाली तो देनी ही नहीं चाहिये ॥ २० ॥

और देवता, ब्राह्मण, पतिव्रता, साधु और वेदोंकी निन्दा कभी भी न करें और न सुनें ॥ २१ ॥

और जिस देवताको शराब या मांस का नैवेद्य चढता हो, तथा जिस देवताके आगे बकरे आदि जीवकी हिंसा होती हो उस देवताका नैवेद्य नहीं खाना चाहिये ॥ २२ ॥

और रास्तेमें चलतें चलतें शिवालयादि जो देवमंदिर आये, उसे देखकर नमस्कार करना चाहिये। और आदरपूर्वक उस देवका दर्शन करना चाहिये ॥ २३ ॥

और अपने अपने वर्णाश्रमका जो धर्म हो, उसको सत्संगीजन त्याग न करें । तथा परधर्मका आचरण न करें, और पाखण्डी धर्मका आचरण भी न करें, और कल्पित धर्मका आचरण न करें. ॥ २४ ॥

और जिसका वचन सुनने से श्रीकृष्ण भगवानकी भक्ति और अपना धर्म, इन, दोनों से पतित हो जाय उसके मुखसे भगवानकी कथा वार्ता भी न सुनें ॥ २५ ॥

और जिस सत्यवचन के कहसेने अपना द्रोह होवे तथा दूसरे का द्रोह होवे, ऐसा सत्यवचन कभी न बोलें। और जो कृतघ्नी हो, उसके संगका त्याग करें, और व्यवहारकार्यमें किसीकी रिश्वत न लेवें ॥ २६ ॥

और चोर, पापी, व्यसनी, पाखण्डी, कामी तथा जादुई चालाकी करके लोगोंको ठगनेवाला इन छः प्रकारके मनुष्योंका संग न करें ॥ २७ ॥

और जो मनुष्य भक्तिका या ज्ञानका आलंबन करके स्त्री, द्रव्य, रसास्वाद के प्रति अतिशय लोलुप बनके पापकी प्रवृत्ति करते हो उन मनुष्योंका संग न करें ॥ २८ ॥

और जो शास्त्र श्रीकृष्ण भगवान तथा श्रीकृष्ण भगवानके जो वराहादि अवतार हैं, उनका युक्तिसे खंडन करते हों, ऐसे शास्त्रो को कभी न मानें और कभी न सुनें ॥ २९ ॥

और बिना छना हुआ पानी तथा दूध न पीयें तथा जिस जलमें खूब सूक्ष्म जन्तु हों, उससे स्नानादि क्रिया न करें ॥ ३० ॥

और जो औषध, शराब तथा मांस पूर्ण हो, वह कभी भी न खावें. । तथा जिस वैद्यके आचरणको न जानते हों, उस वैद्यका दिया हुआ औषध कभी न खावें ॥ ३१ ॥

और लोक तथा शास्त्रों द्वारा मलमूत्र करनेके लिये निषिद्ध हो ऐसे स्थानों, जो जीर्ण देवालय तथा नदी-तालाबके घाट तथा मार्ग और बोये हुये खेत तथा वृक्षकी छाया तथा फूलबारी, बगीचा आदि जो स्थान हों, वहाँ कभी भी मलमूत्र न करें, तथा थूंके भी नहीं ॥ ३२ ॥

और चोरके रास्तेसे प्रवेश करना या निकलना नहीं चाहिये । जो स्थान मालिकीवाला हो उस, स्थानमें उसके मालिकसे पूछे बिना टिके नहीं (उस स्थानमें वास न करें) ॥ ३३ ॥

और हमारे जो सत्संगी पुरुष मात्र हो, वे स्त्रीके मुखसे ज्ञानकथा कभी न सुनें । तथा स्त्रियोंके साथ विवाद न करें, तथा राजाके साथ और राजपुरुष के साथ विवाद न करें ॥ ३४ ॥

और गुरुका अपमान न करें, तथा अत्यंत श्रेष्ठ मनुष्य हो तथा संसारमें प्रतिष्ठासंपन्न हो, विद्यावान हो,

और जो शस्त्रधारी मनुष्य हो उन सबका अपमान न करें ॥ ३५ ॥

और बिना विचारे तत्काल कोई काम न करें, तथा धर्मसंबन्धी जो काम हो वह तत्काल करना चाहिये । और खुद जो विद्या पढे हो, उसे दूसरेको पढाना चाहिये और नित्यप्रति साधुका समागम करें ॥ ३६ ॥

और गुरु, देवता तथा राजा इन तीनोके दर्शनके लिये खाली हाथ न जावें । और किसीका विश्वासघात न करें, तथा अपने मुखसे अपनी प्रशंसा (बढाई) न करें ॥ ३७ ॥

और जिस वस्त्रको पहननेसे अपने शरीरावयव दिखें, ऐसे दूषित वस्त्र समग्र सत्संगीजन न पहनें ॥ ३८ ॥

और श्रीकृष्ण भगवानकी भक्ति कभी धर्म रहित किसी प्रकारसे न करें । तथा अज्ञानी मनुष्य उनकी निंदाके भयसे श्रीकृष्ण भगवानकी सेवाका त्याग न करें. ॥ ३९ ॥

और उत्सव के दिन तथा नित्यप्रति श्रीकृष्णके मंदिरमें आये हुये सत्संगी पुरुषोंको उस मंदिरमें स्त्रियोंका स्पर्श नहीं करना चाहिये । और स्त्रियोंको पुरुषोंका स्पर्श नही करना चाहिये । और मंदिरमेंसे निकलने पर अपनी अपनी रीतसे बर्ताव करें ॥ ४० ॥

और धर्मवंशी गुरुसे श्रीकृष्णकी दीक्षा पाई ऐसे जो ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य इन तीन वर्णोके हमारे जो सत्संगीजन वे गलेमें तुलसीकी दुहरी माला नित्य धारण करें । और ललाट, हृदय और दो हाथ, इन चार जगहों पर उर्ध्वपुंड्र तिलक करें ॥ ४१ ॥

और वह तिलक गोपीचंदन द्वारा करें । अथवा भगवानकी पूजा करने पर बाकी रहे केसर - कुंकुम से युक्त ऐसा जो प्रसादी चंदन उसके द्वारा करें ॥ ४२ ॥

और उस तिलकके मध्यमें जो गोल चंद्रक, वह गोपीचंदन द्वारा अथवा प्रसादीभूत चंदन द्वारा करें । अथवा राधिकाजी और लक्ष्मीजीका प्रसादीरुप जो

कुंकुम उसके द्वारा चन्द्रक करें ॥ ४३ ॥

और अपने धर्ममें रहे हुये श्रीकृष्णके भक्त ऐसे जो सत्शुद्र वे तो तुलसीकी माला और उर्ध्वपुंड्र-तिलक ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यकी तरह धारण करें ॥ ४४ ॥

और उन सत् शुद्रोसे जो जातिमें सत् शुद्र भक्तजन हों, वे तो चंदनादिकाष्टकी दुहरी माला भगवानकी प्रसादी बनाके कंठमे धारण करें । और ललाट पर केवल गोल चंद्रक धारण करें परन्तु तिलक न करें ॥ ४५ ॥

और ब्राह्मणादि त्रिपुंड्र जो आडा तिलक करें तथा रुद्राक्षकी माला धारण करें । यें दो बातें अपनी कुलपरंपरासे चली आयी हों, और वे ब्राह्मणादि हमारे आश्रित हों तो भी वे त्रिपुंड्र और रुद्राक्षका कभी त्याग न करें ॥ ४६ ॥

और नारायण तथा शिवजी इन दोनोंकी एकात्मता समझें क्योंकि वेदोंमें इन दोनोंका ब्रह्मरूपसे

प्रतिपादन किया है ॥ ४७ ॥

और हमारे आश्रित जो मनुष्य उनके लिये शास्त्रमें कहा हुआ जो आपद् धर्म वह अल्प आपत्कालमें मुख्य मानकर कभी ग्रहण न करें ॥ ४८ ॥

और हमारे आश्रित जन हों, वे नित्य सूर्योदयसे पूर्व ब्राह्म मुहुर्तमें उठकर श्रीकृष्ण भगवानका स्मरण करके बादमें शौच विधि करें ॥ ४९ ॥

तत्पश्चात् एक जगहपर बैठकर दन्तशुद्धि करें, उसके बाद पवित्र जलसे स्नान करके धुला हुआ एक वस्त्र पहनें और, एक उत्तरीय वस्त्रको धारण करें ॥ ५० ॥

और उस समयके बाद पवित्र पृथ्वीपर बिछाया हुआ शुद्ध और दूसरे आसन से स्पर्शरहित तथा जिसपर अच्छी प्रकार बैठा जा सके, आसनपर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठकर आचमन करें ॥ ५१ ॥

और हमारे सत्संगी पुरुष मात्र गोल चन्द्रक युक्त ऊर्ध्वपुंड्र तिलक करें । और जो सौभाग्यवती स्त्रियां हों, ये अपने भालपर कुंकुमका चंद्रकमात्र करें ॥ ५२ ॥

और विधवा स्त्रियां अपने ललाटपर तिलक तथा चन्द्रक भी न करें । और हमारे सभी सत्संगीजन मनसे जो चन्दनपुष्पादि उपचार करके श्रीकृष्ण भगवानकी मानसी पूजा करें ॥ ५३ ॥

और फिर श्री राधाकृष्णकी चित्र प्रतिमाका आदरपूर्वक दर्शन करकें नमस्कार करके फिर अपने सामर्थ्य अनुसार श्रीकृष्णका जो अष्टाक्षर मंत्र उसका जाप करें । बादमें अपना व्यावहारिक कामकाज करें. ॥ ५४ ॥

और हमारे सत्संगी जनोंमें राजा अम्बरीष की तरह आत्मनिवेदी उत्तम भक्त हों, वे भी प्रथम कहे अनुसार मानसी पूजा पर्यंत सभी क्रियायें करें ॥ ५५ ॥

और जो आत्मनिवेदी भक्त, वे पाषाण या शालिग्राम उसकी पूजा, देशकालके अनुसार, अपने सामर्थ्य से प्राप्त जो चन्दन, पुष्प, फलादि वस्तुएँ हों, उनसे करें । और फिर श्रीकृष्ण भगवानका जो अष्टाक्षर मंत्र है उसका जाप करें. ॥ ५६ ॥

और बादमें श्रीकृष्ण भगवानके जो स्तोत्र अथवा ग्रंथ, उसका पाठ अपने सामर्थ्य अनुसार करें । जो संस्कृत न पढे हों, वे श्रीकृष्ण भगवानका नामकीर्तन करें ॥ ५७ ॥

और बादमें श्रीकृष्णभगवान को नैवेद्य चढाकर, उनका प्रसादी स्वरुप अन्न हो; वह भक्षण करें । और जो आत्मनिवेदी वैष्णव हों, वे सर्वकालमें प्रेमपूर्वक श्रीकृष्ण भगवान की सेवा पारायण निरंतर रहें ॥ ५८ ॥

और निर्गुण कहे जाने वाले, अर्थात् मायाके जो तीन गुण सत्वादिक हैं, उनसे रहित जो श्रीकृष्ण

भगवान और उनके सम्बन्धसे आत्मनिवेदी भक्तकी सभी क्रियायें निर्गुण होती हैं । उस हेतुके लिये वह आत्मनिवेदी भक्त निर्गुण कहा गया है ॥ ५९ ॥

और जो आत्मनिवेदी भक्त हों, वे श्रीकृष्ण भगवानको बिना अर्पण किया जलभी कभी न पीयें और पत्र, फलादि जो वस्तुए हों, वेभी श्रीकृष्ण भगवान को बिना अर्पण किये भक्षण न करें ॥ ६० ॥

और जो हमारे सभी सत्संगीजन वे वृद्धत्व के कारण या किसी बडे आपत्काल के कारण असमर्थ हो जावे, तो अपना सेव्यमान जो श्रीकृष्णका स्वरूप वह दूसरे भक्तको देकर अपने सामर्थ्य अनुसार आचरण करें ॥ ६१ ॥

और जो श्रीकृष्णका स्वरूप अपने धर्मवंशके आचार्य द्वारा सेवाके लिये दिया गया हो, अथवा उस आचार्यने स्वयं जिस स्वरुपकी प्रतिष्ठा की हो, उसी स्वरूपका सेवन करें । उसके सिवा जो जो श्रीकृष्ण के

स्वरुप हैं, वे नमस्कार करने योग्य है । परन्तु सेवन करने योग्य नहीं है ॥ ६२ ॥

और जो हमारे सत्संगीजन हो वे नित्यप्रति सायंकाल, भगवानके मंदिरमें जा, जाकर उस मंदिरमें श्रीराधिकाजी के पति ऐसे जो श्रीकृष्ण भगवान उनके नामका उच्चस्वरमें कीर्तन करें ॥ ६३ ॥

और जो श्रीकृष्णकी कथावार्ता हो, वह परम आदरभावसे करनी और सुननी चाहिये तथा उत्सवके दिन वाजिंत्र सहित श्रीकृष्णका कीर्तन करना चाहिये ॥ ६४ ॥

और हमारे आश्रित जो सब सत्संगी वे जिस प्रकार पूर्वमें कहा है उस प्रकार नित्य क्रिया करें । तथा संस्कृत और प्राकृत जो सद्ग्रंथ उनका अभ्यास भी अपनी बुद्धिके अनुसार करें ॥ ६५ ॥

और जो मनुष्य जैसे गुणोंसे युक्त हो, उस मनुष्यको वैसे ही कार्यके लिये विचार करके प्रेरित करें । परन्तु जिस कार्यके लिये योग्य नहीं हों, उसे कभी

प्रेरीत न करें ॥ ६६ ॥

और अपने सेवक हों, उन सबका अपने सामर्थ्यके अनुसार अन्न वस्त्रादि द्वारा यथायोग्य संभावना निरंतर करें ॥ ६७ ॥

और जो मनुष्य जिन गुणोंवाला हो, उनको वैसे ही वचनोंसे देशकालानुसार यथायोग्य पुकारें परन्तु अन्यथा न पुकारें ॥ ६८ ॥

और विनयवान् जो हमारे आश्रित सत्संगीजन, वे गुरु, राजा, अतिवृद्ध, त्यागी, विद्वान तथा तपस्वी ये छः व्यक्ति आवें तो सन्मुख उठें, तथा आसन देवें ओर मधुर वचनोंसे पुकारें, इत्यादि क्रियाओंसे उनका सन्मान करें ॥ ६९ ॥

और गुरु, देवता तथा राजाके समीप अथवा सभामें पैर पर पैर चढाकर न बैठें । और वस्त्रसे गुठनोंको बांधकर न बैठें ॥ ७० ॥

और हमारे आश्रित जो सत्संगीजन, वे अपने आचार्य के साथ कभी विवाद न करें । और अपने सामर्थ्यके अनुसार अन्न, धन, वस्त्रादिसे अपने आचार्यकी पूजा करें ॥७१॥

और हमारे जो आश्रितजन, वे अपने आचार्यका आगमन सुनकर आदरसे तत्काल उनके सन्मुख जावें । और वे आचार्य अपने गांवसे वापस पधारे तब गांवकी सीमा तक विदाय देने जावें ॥७२॥

और जिस कर्मका प्रचुर (ज्यादा) फल हो, परन्तु वह धर्मरहित हो, तो उसीका आचरण न करें । क्योंकि धर्म ही सभी पुरुषार्थोंको देनेवाला है । इसलिये किसी फल के लोभसे धर्मका त्याग न करें ॥७३॥

और पूर्वज महापुरुषोंने यदि कभी अधर्माचारण किया हो तो उसका ग्रहण न करें तथा उनका जो धर्माचरण हो, उसीका ग्रहण करें ॥७४॥

और किसीकी भी कोई गुप्त बात हों, उसे किसी भी जगह प्रकाशित न करें । और जिस जीवका जिस रीतिसे सन्मान करना उचित हों, उसका उसी रीतसे सन्मान करें । परन्तु समदृष्टि के कारण उस मर्यादाका उल्लंघन न करें ॥७५॥

और हमारे जो सत्संगी, वे चातुर्मासमें विशेष नियम धारण करें । जो मनुष्य असमर्थ हों, एक श्रावण मासमें ही विशेष नियम धारण करें ॥७६॥

और वह विशेष नियम कौनसे ? वह तो भगवानकी कथाका श्रवण करना, तथा कथा पढना, तथा भगवानका गुणकीर्तन करना, तथा पंचामृत स्नान करके भगवानकी महापूजा करना, तथा भगवानके मंत्रका जाप करें, और स्तोत्रका पाठ करना, तथा भगवानको प्रदक्षिणाएं करनी चाहिये ॥७७॥

तथा भगवानको साष्टांग नमस्कार करना, ये जो आठ प्रकारके नियम हमने उत्तम माने हैं । इनमें से

कोई एक नियम चातुर्मासमें विशेषरुपसे भक्तिपूर्वक ग्रहण करें ॥ ७८॥

और वे सभी एकादशियोंका व्रत आदरसे करें, तथा श्रीकृष्ण भगवानकी जन्माष्टमी आदि जन्मदिवसका व्रत आदरसे करें, और शिवरात्रीका व्रत भी आदरसे करें, तथा उन व्रतों के दिन बडे उत्सव करें ॥७९॥

और जिस दिन व्रतका उपवास किया हों, उस दिन अतिशय यत्नपूर्वक दिवसकी निद्राका त्याग करें । क्योंकि जैसे मैथुनसे मनुष्यके उपवासका नाश होता हैं, उसी तरह दिवसकी निद्रासे मनुष्यके उपवासका नाश होता है ॥८०॥

और सब वैष्णवोंके राजा जो श्रीवल्लभाचार्य, उनके पुत्र जो श्रीविठ्ठलनाथजीने जो व्रत और उत्सवका निर्णय किया है ॥८१॥

एवं विठ्ठलनाथजीका किया हुआ निर्णय उसीका अनुसरण करके सभी व्रत और उत्सव करें, तथा श्रीविठ्ठलनाथजी द्वारा कही हुयी श्रीकृष्णकी सेवा रीति, उसीका ग्रहण करें ॥८२॥

और हमारे सब आश्रितजन, द्वारिका आदि तीर्थोकी यात्रा अपने सामर्थ्य के अनुसार यथाविधि करें । तथा सामर्थ्य अनुसार दीनजन पर दयावान बनें ॥८३॥

और हमारे आश्रितजन, विष्णु, शिव, गणपति, पार्वति, और सूर्य इन पांच देवोंको पूज्य भावसें मानें ॥ ८४॥

और यदि कभी भूत प्रेतादिकका उपद्रव हों, तब तो नारायण कवच का जप करें । अथवा हनुमानजीके मंत्रका जाप करें, परन्तु इसके सिवा दूसरे किसी क्षुद्र देवका स्तोत्र या मंत्र का जाप न करें ॥८५॥

और सूर्यका या चन्द्रका ग्रहण होनेपर हमारे सभी सत्संगीजन अन्य सब क्रियाओंका तत्काल त्याग

करके पवित्र होकर श्रीकृष्ण भगवानके मंत्रका जाप करें ॥ ८६॥

और बादमें उस ग्रहणके मोक्ष होने पर वस्त्रसहित स्नान करके, जो गृहस्थ सत्संगीजन हों, वे अपने सामर्थ्य अनुसार दान करें । और जो त्यागीजन हों, वे भगवानकी पूजा करें ॥८७॥

और हमारे चारों वर्णके सत्संगीजन, वे जन्मका तथा मरणका सूतक (अच्छूत व्रत) अपने अपने सम्बन्धके अनुसार यथाशास्त्र पालन करें ॥८८॥

और ब्राह्मण वर्ण हो, वे शम, दम, क्षमा तथा संतोष आदि जो गुण उससे युक्त बनें । तथा क्षत्रियवर्ण हों, वे शूरवीरता और धीरता आदि गुणों से युक्त बनें ॥८९॥

और वैष्णवर्ण हों, वे कृषिकर्म तथा वाणिज्य व्यापार तथा व्याजबट्टा आदि वृतियोंको धारण करें । तथा शुद्रवर्ण हों, वे ब्राह्मणादि तीनमों वर्णकी सेवा

करें, यह आदि योग्य वृत्तियोंसे बर्ताव करें ॥९०॥

और जो द्विज हों, वे गर्भधानादि संस्कार तथा आन्हिक तथा श्राद्ध ये तीन, अपने अपने गृह्यसूत्रके अनुसार, जैसा जिसका अवसर हो और जैसी धनसंपत्ति हो तदनुसार करें ॥९१॥

और कभी जाने अनजाने छोटा बडा पाप हो जाय, तो अपनी शक्तिके अनुसार उस पापको प्रायश्चित करें ॥९२॥

और चार वेद तथा व्याससूत्र तथा श्रीमद् भागवत् नामक पुराण तथा महाभारत श्रीविष्णुसहस्त्र नामस्तोत्र ॥९३॥

तथा श्रीमद् भगवद् गीता तथा विदुरजीकी कही नीति तथा स्कंद पुराणके विष्णु खंडमे रहा हुआ श्रीवासुदेवमाहात्म्य ॥९४॥

और धर्म शास्त्रोंके मध्यमें रही हुई, याज्ञवल्क्य ऋषिकी स्मृति ये आठ शास्त्र हमारे इष्ट है ॥९५॥

और अपना हित चाहने वाले जो हमारे सब शिष्य, वे ये आठ सत् शास्त्र सुनें। और हमारे आश्रित जो द्विज वे इन सत्शास्त्रोंको पढे तथा पढावें और इनकी कथा करें ॥९६॥

और उन आठ सत्शास्त्रोमेंसे आचार, व्यवहार, एवं प्रायश्चितका निर्णय करनेमें तो मिताक्षरा टीकासे युक्त याज्ञवल्क्यऋषिकी स्मृति को ग्रहण करें ॥९७॥

और इन आठ सत्शास्त्रोमें श्रीमद् भागवत् पुराण, उसके दशम तथा पंचम नामक दो स्कन्ध, वे श्रीकृष्ण भगवानका माहात्म्य जाननेके लिये सबसे अधिक मानें ॥९८॥

दशमस्कन्ध हमारा भक्तिशास्त्र है, तथा पंचमस्कन्ध योग शास्त्र है, और याज्ञवल्क्य स्मृति वह धर्मशास्त्र हैं ॥ ९९॥

और श्रीरामानुजाचार्यसे किया गया जो व्याससूत्रका श्रीभाष्य तथा श्रीमद् भगवद् गीताका भाष्य, वह हमारा अध्यात्मशास्त्र हैं ऐसा जानें ॥१००॥

और इन सब सत्शास्त्रोंमें जो वचन वे श्रीकृष्ण भगवानका स्वरुप तथा धर्म और भक्ति तथा वैराग्य-इन चारोंके अति उत्कर्षता को बतातें हों ॥१०१॥

उन वचनोंको दूसरें वचनों की अपेक्षासें प्रधानरुपसे मानें। और श्रीकृष्ण भगवानकी भक्ति धर्मपूर्वकही करें, इस प्रकार वह सब सत्शास्त्रोकां रहस्य हैं ॥१०२॥

और श्रुति, स्मृति द्वारा प्रतिपादित हुआ जो सदाचार है, उसे धर्म समझें, तथा श्रीकृष्ण भगवानके बारेमें माहात्म्य ज्ञानसे हुआ जो अत्यन्त स्नेह है, उसे भक्ति समझें ॥१०३॥

और श्रीकृष्ण भगवान बिना अन्य पदार्थोमें प्रीति न होनेका वैराग्य समझें। तथा जीव और ईश्वर के स्वरुपको भलीभांति जाननेको ज्ञान कहें ॥१०४॥

और जीव है, वह हृदयमें रहा है, तथा अणुसम सूक्ष्म है, चैतन्यरुप हैं, तथा जाननहारा है। अपनी ज्ञान शक्तिसे नख-शिखपर्यंत अपने समग्र देहमें व्याप्त हैं, और अच्छेद्य, अभेद्य, अजर, अमर, इत्यादि लक्षण युक्त हों, उसे जीव समझें ॥१०५॥

और जो माया है, वह त्रिगुणात्मक है, अंधकाररुप है, तथा श्रीकृष्ण भगवानकी शक्ति है। और इस जीवको देह तथा देहके संबन्धियोंमें अहंममत्व कराने वाली है, ऐसी वह माया समझें ॥१०६॥

और जैसे हृदयमें जीवात्मा रहा है, उसी तरह जीवमें अन्तर्यामीरुपसे रहा है। जो स्वतंत्र है और सब जीवोंको कर्मका फल देने वाला है ऐसा वह ईश्वर समझे ॥१०७॥

और वे ईश्वर कौनसे हैं ? वे परब्रह्म पुरुषोत्तम ऐसे श्रीकृष्ण भगवान ही ईश्वर है । तथा वे श्रीकृष्ण हमारे इष्टदेव हैं। उपासना करने योग्य हैं, सब अवतारोंके कारण हैं ॥१०८॥

और जो समर्थ ऐसे श्रीकृष्ण, श्रीराधिकाजीके साथ हों तो, उन्हें राधाकृष्णनामसे संबोधन करें । और रुकिमणी रुप जो लक्ष्मी है, उससे युक्त हों, तो लक्ष्मीनारायण नामसे संबोधित करें ॥१०९॥

और श्रीकृष्ण यदि अर्जुनसे युक्त हों तो, नरनारायण समझें । तथा वे श्रीकृष्ण बलभद्रादि सहित हों तो, उन उन नामोंसे पुकारें जातें हैं ॥११०॥

और जो राधादि भक्त कभी श्रीकृष्ण भगवान के पार्श्वभाग में रहतें हैं । और कभी तो अत्यन्त स्नेह से श्रीकृष्ण भगवानके अंगमें रहते है तब तो श्रीकृष्ण भगवानको अकेला ही समझें ॥१११॥

इस हेतुके लिये श्रीकृष्ण भगवान के जो स्वरुप हैं, उनमें किसी भी प्रकारका भेद न समझें। और चतुर्भूज, अष्टभूज, सहस्त्रभूज इत्यादि जो भेद मालूम पडते हैं, वे द्विभूज ऐसे जो श्रीकृष्ण की इच्छा से ही हैं, ऐसा समझें ॥११२॥

और ऐसे श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति, पृथ्वी ऊपरके सभी मनुष्य करें । तथा उस भक्ति से अधिक कल्याणकारी ऐसा दूसरा कोई साधन नही है. ऐसा जानें ॥११३॥

और विद्यादि गुणवान् जो पुरुष उनके गुणोंका यदी फल समझें की, श्रीकृष्णभगवानकी, भक्ति करना, सत्संग करना, तथा भक्ति और सत्संग के बिना तो विद्वान भी अधोगति को प्राप्त होता हैं ॥११४॥

और श्रीकृष्ण भगवान तथा श्रीकृष्णभगवानके अवतार, जो ध्यान करने योग्य हैं, तथा श्रीकृष्ण भगवानकी प्रतिमा जो ध्यान करने योग्य

है, इसलिये उसका ध्यान करें । और मनुष्य या देवादि जीव, श्रीकृष्ण भगवानके भक्त हों, या ब्रह्मवेत्ता हो तो भी ध्यान धरने योग्य नही हैं। अतः उनका ध्यान न करें ॥११५॥

और स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण इन तीनों शरीर से विलक्षण जो जीवात्मा, उससे ब्रह्मरुप भावना करके, फिर श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति सर्वकालमें निरंतर करें ॥११६॥

और श्रीमद् भागवत् पुराणका जो दशमस्कंध उसे नित्य प्रति आदर भावसे सुनना, अथवा प्रतिवर्ष एकबार सुनना। और जो पंडित हों, वे नित्य पाठ करें, अथवा प्रतिवर्ष एकबार पाठ करें ॥११७॥

और दशमस्कन्धका पुरश्चरण अपनी शक्तिके अनुसार किसी पुण्य स्थानमें करें। तथा विष्णुसहस्त्रनाम आदि जो सत्शास्त्र उनका पुरश्चरण भी अपने सामर्थ्य के अनुसार करना और कराना, क्योंकि वह पुरश्चरण कैसा

है ? तो अपना मनोवांछित फल देनेवाला है ॥११८॥

और कष्टप्रद कोई देव सबन्धी आपत्ति आ पडे, तथा मनुष्य संबन्धी आपत्ति आ पडे, तथा रोगादि आपत्ति आ पडे तो उससे अपनी और दूसरे की रक्षा हो वैसा वर्ताव करना, किन्तु अन्य रीतिसे वर्ताव नहीं करना ॥११९॥

तथा आचार, व्यवहार और प्राचश्चित इन तीनों बातों को देश, काल, अवस्था, द्रव्य, जाति और समार्थ्य के अनुसार जानें ॥१२०॥

और हमारा मत विशिष्टाद्वैत है, ऐसा समझें । तथा हमको प्रिय जो धाम वह गोलोक है । और उस धाममें ब्रह्मरुपसे रहकर श्रीकृष्ण भगवानकी सेवा करना ही हमने मुक्ति मानी है ॥१२१॥

और जो पूर्व सब धर्म कहे - वे सब हमारे आश्रित जो त्यागी, गृहस्थ, भाई और बाई सब सत्संगी, उनके जो सामान्य धर्म कहे हैं। वे सब सत्संगी मात्रको समानरुपसे पालने के हैं । और उन सबके जो विशेष

धर्म है, वे पृथक् पृथक् रुपसे कहते हैं ॥१२२॥

अब प्रथम धर्मवंशी जो आचार्य और उनकी पत्नियां उनके विशेष धर्म कहते हैं, हमारे बडेभाई और छोटेभाई , उनके पुत्र अयोध्याप्रसाद और रधुवीर, उनके समीप सम्बन्ध रहित जो अन्य स्त्रियां, उन्हें मंत्र उपदेश कभी न करें ॥१२३॥

और उन स्त्रियोंको कभी छुयें भी नहीं, और उनसे बोले नहीं । तथा किसी जीवके साथ क्रुरता न करें, तथा किसीकीं भी धरोहर न रखें ॥१२४॥

और व्यवहार कार्य में किसीकी भी जमानतदारी न करें । तथा कोई आपत्काल आ पडें तो भिक्षा मांगकर अपना निर्वाह करके आपत्काल पार करें । परन्तु किसीका भी कर्जा कभी न करें ॥१२५॥

और अपने जो शिष्य धर्मनिमित्त अन्न दें, उसे बेचे नहीं, और वह अन्न पुराना होवे तो, पुराना किसीको

देकर नया लेवें । तथा इस प्रकार पुराने का नया करें, वह विक्रय नहीं कहलाता है ॥१२६॥

और भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी के दिन गणपति की पूजा करें । तथा आश्विन कृष्णा चतुर्दशी के दिन हनुमानजी की पूजा करें ॥१२७॥

और हमारे आश्रित जो सब सत्संगी, उनके धर्म की रक्षा करने के लिये, उन सबके गुरुपद पर हमने स्थापित किये हूये जो अयोध्याप्रसाद और रधुवीर वे मुमुक्षुजनों को दीक्षा देवें ॥१२८॥

और अपने आश्रित जो सब सत्संगी उन्हे अधिकार अनुसार अपने अपने धर्म में रखना, तथा साधु को आदर से मानना, तथा सत्शास्त्र का अभ्यास आदरपूर्वक करें ॥१२९॥

और जो बडे मंदिर, उनमें हमने स्थापित किये हुए जो श्रीलक्ष्मीनारायण आदि श्रीकृष्णके स्वरूप, उनकी सेवा यथाविधि करें ॥१३०॥

और भगवान के मंदिर में आया हुआ हरकोई अन्नार्थी मनुष्य, उसकी अपने सामर्थ्य अनुसार अन्नदान से आदरपूर्वक संभावना करनी चाहिये ॥१३१॥

और विद्यार्थी अध्यापन की पाठशाला स्थापन करके, उसमें एक विद्वान ब्राह्मण को रखकर पृथ्वीपर सद्विद्या प्रवृत्ति कराते रहें । क्योंकि विद्यादान से बडा पुण्य होता है ॥१३२॥

और अब वे अयोध्याप्रसाद तथा रधुवीर इन दोनों की पत्निया, वे अपने पति की आज्ञा से स्त्रियोंको ही श्रीकृष्ण के मंत्र का उपदेश करें । किंतु पुरुष को न करें ॥१३३॥

और उन दोनों की पत्नियां अपने समीप संबन्धरहित पुरुष, उनका स्पर्श कभी न करें । उनके साथ बोले भी नहीं, और उन्हे अपना मुख भी न दिखावें ।(इस प्रकार धर्मवंशी आचार्य और जो उनकी पत्निया, उनके विशेष धर्म कहे हैं) ॥१३४॥

अब गृहस्थाश्रमियों के विशेष धर्म कहते है, हमारे आश्रित जो गृहस्थाश्रमी पुरुष, उनके समीप सम्बन्ध बिनाकी जो विधवास्त्रियां, उनका स्पर्श न करें ॥१३५॥

और वह गृहस्थाश्रमी पुरुष, युवावस्थावाली जो अपनी माता, बहन या पुत्री के साथ भी आपत्काल के बिना एकान्त में न रहें । तथा अपनी स्त्री का दान किसीको न करें ॥१३६॥

और जिस स्त्री का किसी व्यवहार से राजा का प्रसंग होवें, तो ऐसी स्त्री का प्रसंग किसी प्रकार भी न करें ॥१३७॥

और वे गृहस्थाश्रमी के घर कोई अतिथि आया हो तो अपने सामर्थ्य के अनुसार अन्नादि द्वारा सत्कार करें । और होमादिक जो देवकर्म और श्राद्धादिक जो पितृकर्म अपने सामर्थ्य के अनुसार यथाविधि जैसा उचित हो वैसा ही करें ॥१३८॥

और हमारे आश्रित जो गृहस्थ, वे माता, पिता, गुरु तथा रोगातुर ऐसा कोई मनुष्य उसकी सेवा जीवनपर्यंत अपने सामर्थ्य के अनुसार करें ॥१३९॥

और अपने वर्णाश्रम के योग्य जो उद्यम वह अपने सामर्थ्य अनुसार करें । तथा कृषिवृत्तिवाले जो गृहस्थ सत्संगी वे बैल के वृष्ण का उच्छेद न करें ॥१४०॥

और गृहस्थ सत्संगी अपने सामर्थ्य अनुसार, तथा समय के अनुसार जितना घरमें खर्च होता हो, उतने ही द्रव्य का संग्रह करें । और जिसके घरमें पशुं हों, ऐसे गृहस्थ अपने सामर्थ्य के अनुसार तृण (घास) आदिका संग्रह करें ॥१४१॥

और गौ, बैल, भेंस, घोडे आदि जो पशु उनकी घास पानी द्वारा अपने से संभावना हो सके तो उस पशु को रखें और संभावना न होवें तो न रखें ॥१४२॥

और साक्षी सहित लेखके बिना तो अपने पुत्र, तथा मित्रादिके साथ भी पृथ्वी या धन लेन देन का व्यवहार कभी न करें ॥१४३॥

और अपना अथवा दूसरे का विवाह सम्बन्धी कार्य तथा उसमें दिया जानेवाला धन उसे साक्षी सहित लिखित किये बिना केवल बोली मात्रसे (बातचीतसे) न करें ॥१४४॥

और अपनी उपजका द्रव्य उसके अनुसार निरन्तर खर्च करें । परन्तु उसके अतिरिक्त न करें । आय के उपरान्त जो खर्च करता है, उसे बडा दुःख होता है, ऐसा सभी गृहस्थ मनमें समझें ॥१४५॥

और अपने व्यवहार कार्यके लिये जितने धनकी उपज हो तथा जितना खर्च हो, इन दोनों को स्मरण करके, नित्यप्रति सुंदर अक्षरोंसे खुद आयव्यय लिखें ॥१४६॥

और गृहस्थाश्रमी सत्संगी, वे अपनी वृत्ति तथा उद्यमसे प्राप्त धनधान्य आदि हो, उसमेंसे दसवा भाग

निकालकर श्रीकृष्ण भगवानको अर्पण करें । तथा जो व्यवहारमें दुर्बल हो, वे बीसवां भाग अर्पण करें ॥१४७॥

और एकादशी आदि व्रत, उनका उद्यापन अपने सामर्थ्यके अनुसार यथाशास्त्र करें । वह उद्यापन कैसा है तो वह मनोवांच्छित फल देनेवाला है ॥१४८॥

और श्रावण मासमें श्री महादेवजीका पूजन, बिल्व पत्रादि द्वारा प्रीतिपूर्वक सब प्रकारसे अपने आप करें, या दूसरे से करावें ॥१४९॥

और अपने आचार्यसे तथा श्रीकृष्ण भगवानके मंदिरसे कर्जा न निकालें । और अपने आचार्य तथा श्रीकृष्णके मंदिरसे अपने व्यवहारके लिये बरतन, आभूषण और वस्त्रादि वस्तुये हो उन्हें मांगकर न लावें ॥१५०॥

और श्रीकृष्ण भगवान तथा अपने गुरु तथा साधु, इनके दर्शन करने के लिये जाते हुये मार्गमें पराया अन्न खावें नहीं । तथा श्रीकृष्णभगवान और अपने गुरु

या साधु तथा उनके स्थानकमें भी पराया अन्न खावें नहीं । क्योंकि पराया अन्न तो हमारे पुण्यको हरण कर लेता है । इसलिये अपनी गांठसे खर्च करके खावें ॥१५१॥

और अपने कामकाज के लिये बुलाये मजूर, उन्हे जितना धन अथवा धान्य देनेका कहा हों, तदनुसार ही देवें । परन्तु उससे कम न देवें । और कोई हमारे पास कर्ज मांगता हो, तथा वह कर्ज वापिस दे चूके हों, तो उस बातको गुप्त न रखे । तथा अपने वंश और कन्यादान को गुप्त न रखें । और जो दुष्टजन हो, उनके साथ व्यवहार न करें ॥१५२॥

और जिस स्थानमें हम रहते हो, उस जगह कोई कठिन काल अथवा शत्रु तथा राजा का उपद्रव हो, और सब प्रकारसे अपनी लज्जा जाती हो । या धनका नाश होता हो, अथवा अपने प्राणोंका नाश होता हों ॥१५३॥

और वह यदि अपनी मूल जमीदारी (गरास) तथा वतनका गांव हो, तो भी उसका हमारे विवेकी

सत्संगी गृहस्थ, तत्काल त्याग करें। और जहां उपद्रव न होवे, ऐसे दूसरे देशमें जाकर सुखपूर्वक रहें ॥१५४॥

और धनाढ्य गृहस्थ सत्संगीजन हों वे हिंसा रहित विष्णू सम्बन्धी यज्ञ करें, तथा तीर्थमें और द्वादशी आदि पर्व पर ब्राह्मण तथा साधुओंको भोजन करायें ॥१५५॥

और धनाढ्य गृहस्थ सत्संगीजन भगवानके मंदिरमे बडे उत्सव करवाते रहें। तथा सुपात्र ब्राह्मणोंको अनेक प्रकारके दान देते रहें ॥१५६॥

और हमारे आश्रित जो सत्संगी राजा, वे धर्मशास्त्रके आश्रयसे अपने पुत्र तुल्य प्रजाका पालन करें, तथा पृथ्वीपर धर्मका स्थापन करें ॥१५७॥

और वह राजा, राज्यके सात अंग तथा चार उपाय तथा छः गुणों का लक्षण पूर्वक यथार्थ रुपसे जाने। और जासूस (गुप्तचर) भेजने के स्थानक तथा व्यवहार को जाननेवाले सभासद तथा दंड देने योग्य और दंड नहीं देने योग्य जो मनुष्य हों, उन्हें लक्षणोंसे

अच्छीप्रकार पहचानें ॥१५८॥

अब सौभाग्यवती (सधवा) स्त्रियों के विशेष धर्म कहते हैं। हमारे आश्रित जो सौभाग्यवती (सधवा) स्त्रियां, उनका पति अंध हो, रोगी हो, दरिद्री हो, नपुंसक हो तो भी उसकी ईश्वर के समान ही सेवा करें और उसके प्रति कटुवचन न बोलें ॥१५९॥

और वे सौभाग्यवती स्त्रियाँ, रुप यौवनसे युक्त और गुणवान ऐसा अन्य पुरुष का प्रसंग सहज स्वभावसे भी न करें ॥१६०॥

और पतिव्रता ऐसी जो सौभाग्यवती स्त्रियाँ, वे अपनी नाभी, जँघा और वक्षःस्थल अन्य पुरुष देख सके उस प्रकार न वर्तें। और उत्तरीय वस्त्र रहित खुल्ले शरीर न रहें तथा भांड-लीला देखने न जावें। और निर्लज्ज तथा स्वैरिणी स्त्रियाँ हों, तथा कामिनी और पुंश्चली स्त्रियाँ हों, उनका संग न करें ॥१६१॥

और सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपना पति परदेश

गया हो तो आभूषण धारण न करें। तथा सुंदर वस्त्र न पहनें। और पराये घर बैठने न जावें तथा हास्यविनोदादिका त्याग करें ॥१६२॥

अब विधवा स्त्रियों के विशेष धर्म कहते हैं। हमारी आश्रित जो विधवा स्त्रियाँ, वे पतिबुद्धिसे श्रीकृष्ण भगवानका सेवन करें। और अपने पिता पुत्रादि संबन्धियोंकी आज्ञानुसार वर्ते, परन्तु स्वतंत्ररूपसे वर्ताव न करें ॥१६३॥

और वे विधवा स्त्रियाँ, अपने समीप सम्बन्ध रहित जो पुरुष हों, उनका स्पर्श कभी न करें। और अपनी युवावस्थामें आवश्यक कार्यके बिना समीप सम्बन्धवाले युवान पुरुषोंके साथ कभी संभाषण न करें ॥१६४॥

और स्तनपान कर्ता बालक, उसका स्पर्श तो जैसे पशुको छूनेमें दोष नहीं उस प्रकार उसमें दोष नहीं। और किसी वृद्ध पुरुषको किसी आवश्यक कामसे छूना

पडे या बोलना पडे तो उसमें दोष नहीं ॥१६५॥

और वे विधवा स्त्रियाँ, अपने समीप संबन्ध न हो, ऐसे पुरुषे कोई भी विद्या न सीखें। और व्रत उपवाससे बारबार अपने देहका दमन करें ॥१६६॥

और वे विधवा स्त्रियाँ, अपने घरमें अपने जीवनपर्यंत, देह निर्वाह हो उतनाही धन हों तो, वह धन धर्मकार्यमें भी न दे। उससे अधिक हो तो दे ॥१६७॥

और वे विधवा स्त्रियाँ, एकबार ही भोजन करें, तथा पृथ्वीपर सोवें। तथा मैथुनासक्त जो पशु पक्षी आदि जीव-प्राणीमात्र उन्हें जानबूजकर कभी न देखें ॥१६८॥

और वे विधवा स्त्रियाँ, सौभाग्यवती स्त्री जैसा वेश धारण न करें। तथा सन्यासिनी और वैरागिनी जैसा वेश न पहने। और अपने देश, कुल तथा आचारके

विरूद्ध जो वेश वह कभी न पहनें ॥१६९॥

और गर्भपातिनी स्त्री का संग न करें, तथा स्पर्शभी न करें। और पुरुषके रस शृंगारसंबंन्धी वार्ता कभी भी न करें और न सुनें ॥१७०॥

और युवावस्थामें विद्यमान विधवा स्त्रियाँ युवावस्थायुक्त अपने संबन्धी पुरुष के साथ भी एकांत स्थानमें आपत्काल बिना न रहें ॥१७१॥

और होलीका खेल न खेलें, और आभूषणादि धारण न करें। तथा सुवर्ण आदि धातुके तारोंसे युक्त सूक्ष्म वस्त्र भी कभी धारण न करें ॥१७२॥

और सधवा हो या विधवा स्त्रियाँ हों, वे वस्त्र पहने बिना स्नान न करें। अपनी रजस्वला (मासिक) स्थिति को किसी प्रकार गुप्त न रखें ॥१७३॥

और रजस्वलायुक्त सधवा और विधवा स्त्रियाँ, वे तीन दिन तक किसी मनुष्यको या वस्त्रादिको छुयें नहीं । और चौथे दिन स्नान करके छुयें, इसीप्रकार

गृहस्थाश्रमी पुरुष और स्त्रियाँ उनके ये विशेष धर्म कहे हैं। वे सबधर्म आचार्य और उनकी पत्नियाँ पालन करें क्योंकि, वे भी गृहस्थाश्रमी हैं ॥१७४॥

अब नैष्ठिक ब्रह्मचारी के विशेष धर्म कहते है, हमारे आश्रित नैष्ठिक ब्रह्मचारी वे स्त्री मात्रका स्पर्श न करें। और स्त्रियों के साथ बोले नहीं, और जानबूजकर सन्मुख देखे नहीं ॥१७५॥

और उन स्त्रियों की बात कभी न करें और न सुनें। और जिस स्थानमें स्त्रियोंका पद-संचार हो, उस स्थानमें स्नानादि क्रिया करने न जावें ॥१७६॥

और देवताकी प्रतिमा बिना दूसरी स्त्री की प्रतिमा, चित्रकी और काष्ठ आदिकी होवें तो उसका स्पर्श न करें। और जानबुझकर उस प्रतिमा को भी न देखें ॥१७७॥

और नैष्ठिक ब्रह्मचारी स्त्री की प्रतिमाको न बनावे तथा स्त्रीके शरीरपर धारण किये वस्त्रको न छुये

। तथा मैथुनासक्त पशु-पक्षी आदि प्राणीमात्रको जानबुझकर न देखें ॥१७८॥

और स्त्रीके वेशको धारण करनेवाले पुरुषका स्पर्श न करे उसै देखे नहीं, और उसके साथ बोले नहीं। तथा स्त्रियोंको संबोधित करके भगवानकी कथावार्ता या कीर्तन न करें ॥१७९॥

और वह नैष्ठिक ब्रह्मचारी, अपने ब्रह्मचर्य व्रतका भंग हो ऐसा वचन अपने गुरुकाभी न मानें। तथा निरंतर धैर्यवान रहे, और संतोषयुक्त रहे, तथा मान रहित रहे ॥१८०॥

और बलपूर्वक (जबरदस्तोसे) अपने अतिशय समीप आनेवाली स्त्रीको कहकर अथवा तिरस्कार करके भी लौटा देवें, किन्तु समीप आनेकी मनाई करें ॥१८१॥

और यदि कभी स्त्रियोंका अथवा अपना प्राण जानेका आपत्काल आ पडे; तब तो उन स्त्रियोंको छुकर या उनके साथ बोलकर भी उन स्त्रियोंकी और अपनी

रक्षा करें ॥१८२॥

और वह नैष्ठिक ब्रह्मचारी, अपने शरीरपर तेलामर्दन न करें। तथा आयुध धारण न करें, भयंकर वेश भी न पहने, तथा रसना (जिह्वा) इंद्रियको जीतें ॥१८३॥

और जिस ब्राह्मणके धरमें स्त्री परोसनेवाली हो, उस घर भिक्षाके लिये न जावें और जहां पुरुष परोसनेवाला हो, वहाँ जावे. ॥१८४॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी, वेदशास्त्रका अभ्यास करें, और गुरुकी सेवा करें तथा स्त्रियोंकी तरह स्त्रैण पुरुषका संग सर्व कालमें त्याग दे ॥१८५॥

जाति से जो ब्राह्मण हैं वे चमडे के पात्र से निकाला हुआ पानी कदापि न पीयें तथा प्याज और लहसुन आदि अभक्ष्य चीजों का भोजन किसी भी प्रकार से न करें ॥१८६॥

और जो ब्राह्मण हो, वह स्नान, संध्या, गायत्रीका जाप, श्रीविष्णुकी पूजा, तथा वैश्वदेव, किये बिना भोजन न करें । इस प्रकार नैष्ठिक ब्रह्मचारीके विशेष धर्म कहे हैं ॥१८७॥

अब साधुके विशेष धर्म कहते है, हमारे आश्रित साधु नैष्ठिक ब्रह्मचारीकी तरह स्त्रियों के दर्शन भाषणादिके प्रसंगको त्याग देवें । तथा स्त्रैण पुरुषके प्रसंगादिका त्याग करें । और अंतर शत्रु काम, क्रोध, लोभ तथा मान आदिको जीते ॥१८८॥

और सब इंद्रियो को जीतें; तथा रसना इन्द्रिको तो विशेषरुपसे जीतें तथा द्रव्यका संग्रह अपने आप न करें तथा अन्य किसी के पास कराना नहीं ॥१८९॥

और किसीकी धरोहर न रखे, तथा कभी धैर्यका त्याग न करें । तथा अपने निवास स्थानमें कभी भी स्त्री का प्रवेश न होने दें ॥१९०॥

और वे साधुको आपत्काल पडे बिना रात्रीके समय संगति बिना चलना नहीं चाहिये । तथा आपत्कालके बिना कभी भी अकेले चलना नहीं चाहियें (प्रवास न करें) ॥१९१॥

और जो वस्त्र बहुत कींमती हो तथा चित्रविचित्र हो या कुसंभ आदि (लाल सुर्ख) रंगसे रंगा हुआ हो तथा शाल-दुशाल हो, या किसी दुसरे की इच्छासे प्राप्त हुआ हो तो भी वह वस्त्र पहने या ओढे भी नहीं ॥१९२॥

और भिक्षा तथा सभा प्रसंग इन दो कार्यो के सिवा, गृहस्थके घर न जावें, तथा निरंतर भक्ति करके ही समय बितावें ॥१९३॥

और जिस गृहस्थके घर पके हुये अन्नका परोसनेवाला पुरुष हो, तथा स्त्रियोंका दर्शनादि प्रसंग किसी भी प्रकार न हो. ॥१९४॥

ऐसा जो गृहस्थीका घर उस घरपर ही हमारे साधु भोजनके लिये जावें । तथा कहे अनुसार घर न होतो कच्चा अन्न मांगकर हाथसे रसोई करें । तथा भगवान को नैवैद्य समर्पण करके भोजन करें ॥१९५॥

और ऋषभदेव भगवानके पुत्र भरतजी वे जड ब्राह्मण बनकर जैसे वर्ताव करते थे उसी तरह हमारे परमहंस साधु जन वर्ताव करें ॥१९६॥

और नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा साधुजन तांबुल (पान) तथा अफिम और तम्बाकु इत्यादि के भक्षण का प्रयत्नपूर्वक त्याग करें ॥१९७॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा साधु गर्भधानादि संस्कार के निमित्त भोजन न करें । तथा एकादशाह पर्यंत जो प्रेतश्राद्ध भोजन वह भी न करें और द्वादशाह श्राद्धभोजन भी न करें ॥१९८॥

तथा रोगादि आपत्काल पडे बिना दिनमें सोना नहीं, और ग्राम्यवार्ता न करें । तथा ग्राम्यवार्ता जानबूजकर सुने भी नहीं ॥१९९॥

और नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा साधु रोगादि आपत्काल के बिना चारपाइ पर सोना नहीं, तथा साधुके समाने तो निरंतर निष्कपट भावसे वर्ताव करें ॥२००॥

और वह साधु तथा ब्रह्मचारी यदि कोई कुमतिवाले दुष्टजन अपने को गाली दे, या मारे, तो वह सहन हो करना चाहिये । परन्तु उसके सामने गाली देना या मारना नहीं चाहिये । और जिस प्रकार उसका हित हो, वैसा ही मनमें चिंतवन करना चाहिये । किन्तु उसका बुरा हो ऐसा तो संकल्प भी न करें ॥२०१॥

और किसीके लिये दूतकर्म न करें । तथा चुगलखोरी न करें । और किसीके चार चक्षु न बने तथा

देहके लिये अहंबुद्धि न रखें। और स्वजनादिके लिये ममता न रखें। इस प्रकार साधुके विशेष धर्म कहे है ॥२०२॥

और हमारे आश्रित सत्संगी भाई और बाई (स्त्रियाँ) उनके जो सामान्य और विशेष धर्म, हमने संक्षेपमें लिखे है। तथा इस धर्मका जो विस्तार, वह हमारे संप्रदायके ग्रंथो द्वारा जानें ॥२०३॥

और सब सत् शास्त्रोंका सार हमारी बुद्धिसे उधृत करके इस शिक्षापत्रीमें लिखा है। वह कैसी है? सब मनुष्य मात्रको अभीष्ट फल देनेवाली है. ॥२०४॥

इस हेतुके लिये हमारे आश्रित सब सत्संगीजन, सावधानीसे नित्यप्रति इस शिक्षापत्रीके अनुसार वर्ताव करें। परन्तु अपने मनकी इच्छानुसार तो कभी न वर्ते ॥२०५॥

और हमारे आश्रित पुरुष और स्त्रियाँ, जो इस शिक्षापत्री के अनुसार आचरण करेंगे तो वे धर्म, अर्थ,

काम तथा मोक्ष इन चारों पुरुषार्थ की सिद्धिको निश्चयसे प्राप्त करेगें ॥२०६॥

और जो स्त्रियाँ या पुरुष इस शिक्षापत्रीके अनुसार वर्ताव नही करते हैं, वे लोग हमारे संप्रदायसे बाहर हैं। ऐसा हमारे संप्रदायवाले स्त्रीपुरुष समझें ॥२०७॥

और हमारे आश्रित सत्संगी इस शिक्षापत्रीका नित्यप्रति पाठ करें। और जिसे पठना न आता हो, वे आदरभावसे इस शिक्षापत्रीका श्रवण करें ॥२०८॥

और इस शिक्षापत्री को पढकर सुनाये एसा कोई न हो तब प्रतिदिन इस शिक्षापत्री की पूजा करें और यह हमारी वाणी वह हमारा स्वरूप है, एसा समजकर इसे परम आदरपूर्वक मानें ॥२०९॥

और हमारी इस शिक्षापत्रीको, जो दैवी संपदासे

युक्त हो, उसे दे। और जो मनुष्य आसुरीसम्पदासे युक्त हो, उसे कभी न दे ॥२१०॥

संवत् १८८२ अठारसो बयासी के माघ सुक्ला पंचमीके दिन इस शिक्षापत्री को हमने लिखी है। वह परम कल्याण कारिणी है ॥२११॥

और अपने आश्रित भक्तजन-उनकी समग्र पीडाका नाश करनेवाले तथा धर्म सहित भक्तिकी रक्षा करनेवाले, और अपने भक्तजनों को मनोवाच्छित सुख देनेवाले, ऐसे श्रीकृष्ण भगवान हमारे समग्र मंगलका विस्तार करे ॥२१२॥

इति श्रीसहजानंदस्वामि शिष्य नित्यानंदमुनि लिखिता श्रीगुर्जरी भाषानुसारिणी हिन्दी टीका समाप्त।

॥ महामंत्रपीठ फरेणीधामका माहात्म्य ॥

फरेणी गाँवमें महा मंदिर है वहां वेलाभाई सोनीके घरमें सद्. रामानंद स्वामी और श्री सहजानंद स्वामी ठहरते। ईस पवित्र स्थान पर दिव्य और कल्याणकारी अलौकिक चरित्र हुंये हैं। वही पावनकारी स्थल पर अ.मू. सद्. श्री गुणातीतानंद स्वामीकी आज्ञासे सद्. व्रजानंद स्वामीने मंदिर बनाया। यह स्थान परम मंगलकारी महाप्रसादीभूत और दर्शनीय स्थान हैं।

- उद्धवावतार सद्. श्री रामानंद स्वामीसे मोक्षार्थी यात्रिकोके लिये सदाव्रत शुरु किया।
- ईस पवित्र स्थान पर सद्.श्री रामानंद स्वामीने स्वाश्रितो की आधी व्याधि और उपाधी दूर करने वास्ते कष्टभंजनदेव (हनुमानजी) चैत्र सुद १५ (पूनम) के शुभ दिन प्रतिष्ठा आरती की और

दर्शनार्थी भक्तोके रक्षण के लिये जिम्मेदारी सोंपी कालान्तरे यही कष्टभंजन देवकी श्री सहजानंद स्वामीने आरती उतारकर विशेष दैवत प्रदान किया ।

- वही स्थल पर अ.मू. सद्. श्री गुणातीतानंद स्वामीके शिष्य सद्. श्री बालमुकुंददासजी स्वामीसे कष्टभंजन देवका दुसरे स्वरुपकी स्थापना की आरती उतारकर । ईसी तरह दुसरे हनुमानजी भी स्वाश्रितोंकी क्षेमकुशलता के लिये कार्यरत हुए ।
- सद्. श्री रामानंद स्वामी संवत १८५८ मागसर सुदी १३ (तेरस) गुरुवारके दिन अंतर्ध्यान हुए । उनकी अंतिम संस्कार विधि भद्रावती वावके किनारे संपन्न हुई । ईसी समय श्री सहजानंद स्वामीने श्री रामानंद स्वामीके ६० शिष्योको

एक ही दिनमें धाममें पहुंचा दिये ।

- संवत १८५८ मागसर वदी ११ (अेकादशी) दिनांक ३१-१२-१८०१ गुरुवारके दिन रामानंद स्वामीके चौदहवे दिन श्री सहजानंद स्वामी अपने स्वाश्रितोंका शोक दूर करने के वास्ते प्रथम धर्मसभाका आयोजन किया । सबसे पहले झरणा-परणासे आये संन्यासी शीतलदासको समाधि कराई । अक्षरधामकी ईस समाधिमें रामानंद स्वामीको श्री सहजानंद स्वामीकी सेवा करते दिव्य दर्शन कराया और अपना सर्वोपरि स्थितिका दर्शन कराया । सन्यासी शीतलदासको प्रथम साधु दीक्षा प्रदान करके व्यापकानंद नामाभिधान किया ।
- फरेणीमें श्रीजी महाराज और पांचसो परमहंसो और अनेक हरिभक्तोके साथ कईबार स्नान क्रिया

की जिसका नाम है भद्रावतीवाव ।

- अपने अनुयायीओसे प्रथम स्वामिनायण महामंत्रकी धून की, उद्धव संप्रदाय को स्वामिनारायण संप्रदाय उदघोषित किया । उसी समय प्रमुख सत्संगीयोसे श्री सहजानंद स्वामीको प्रथम वस्त्रभुषण धारण करवाके अपना आनंद व्यक्त किया और पूजन किया ।
- संवत २०६० मागसर वद १३ (तेरस) दिनांक२१-१२-२००३ रविवारके दिन प.पू.ध.धू.१००८ आचार्य श्री राकेशप्रसादजी महाराजने पावन चरणोंसे भूमि पवित्र बनी ।
- सविशेष माहिती के लिए श्री सहजानंद संस्कारधाम महामंत्रपीठ फरेणी द्वारा प्रकाशीत ''फरेणी माहात्म्य'' पुस्तकका अध्ययन करें

संस्थाकीय उदेश

- श्रीजी महाराजकी प्रसन्नता हेतु सत्संग विचरण, सत्संग सभा, सत्संग शिबिर द्वारा श्रीजी महाराज और नंदसंतोके सिद्धान्तोका प्रसार और प्रचार करना ।
- निवृत और धर्मपरायण जीवन व्यतित करनने के लिए ईच्छुक गृहस्थोंको सुविधापूर्ण सुंदर ''शांतिनिकेतन'' योजना ।
- गरीब किन्तु अभ्यासमें प्रवीण विधार्थीओंको सहाय ।
- वाल, युवा और महिलाओ द्वारा धार्मिक और सामाजिक प्रवृतियो ।
- अतिवृष्टि, अनावृष्टि, धरतीकंप जैसे देव निर्मित आपत्तियोंमे सहाय ।
- धार्मिक पुस्तक, ध्वनिमुद्रित सीडी, वीसीडी, डीवीडी और एमपी ३ के माध्यमसे धार्मिक साहित्य प्रकाशन ।
- आधि, व्याधि, उपाधि, उन त्रिविध तापके शमनके लिए भक्त-चिंतामणि पारायणें ।

शिक्षापत्री

-: संस्था के प्रकाशनो :-

(१)	फरेणी माहात्म्य गुजराती	आवृत्ति १ से ७
(२)	फरेणी माहात्म्य (अंग्रेजी)	आवृत्ति १
(३)	व्यापकानंद स्वामी का आख्यान	आवृत्ति १ से २
(४)	साक्षात् सविता (गुजराती)	आवृत्ति १ से ३
(५)	साक्षात् सविता (अंग्रेजी)	आवृत्ति १ से २
(६)	वचनामृत रसायण	आवृत्ति १
(७)	शिक्षापत्रि (गुजराती)	आवृत्ति १ से २
(८)	शिक्षापत्रि अंग्रेजी	आवृत्ति १
(९)	फरेणी माहात्म्य (हिन्दी)	आवृत्ति १
(१०)	सद्गुरू गुणातीतानंद स्वामी की वार्ताए (हिन्दी)	आवृत्ति १
(११)	सद्गुरू गुणातीतानंद स्वामी की वार्ताए (अंग्रेजी)	आवृत्ति १
(१२)	श्री हरिलीलाकल्पतरु: (गुजराती) भाग १ से ४	आवृत्ति १
(१३)	किर्तन - धून - कथा और सत्संग शिबिरो की सी.डी., वी.सी.डी., डी.वी.डी., और एम.पी. ३	

शिक्षापत्री

शिक्षापत्री

शिक्षापत्री